ખરોંચ

પાણ્ડેય જગન્નાથપ્રસાદ સિંહ

खरौंच

(भोजपुरी कहानी संग्रह)

पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह

भोजपुरी संस्थान

२, ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना-८०० ००१

भोजपुरी संस्थान ग्रंथमाला के उनतीसवाँ फूल

ग्रंथमाला सम्पादक : पाण्डेय कपिल

खरौंच

(भोजपुरी कहानी संग्रह)

लेखक : पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह

प्रकाशक : भोजपुरी संस्थान, २, ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना-१

संस्करण : पहिला, सन् १९८४ ई०

सर्वाधिकार : पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह

आवरण-शिल्पी : पी० राजीवनयन

दाम—पाँच रुपया

मुद्रक : कर्म प्रेस, लोदीपुर, पटना-१ (दूरभाष : २४४५६)

KHARONCH

A collection of short stories in Bhojpuri

by

Pandeya Jagannath Prasad Sinha

बाबूजी

(स्व० दामोदर सहाय सिंह 'कविकिंकर')

का

पुण्यस्मृति में

कहानी			पृष्ठ
गुरु दक्षिणा	....	....	६
तोहफा	....	....	१४
बयान	....	....	२०
झूठ	....	....	२६
खरोंच	....	....	३६

भूमिका

अपना एह अस्सी बरिस के उमिर ले पहुँचत-पहुँचत हमरा ढेर-ढेर अचरज देखे के मिलल बा। ओही में एगो अचरज बाटे भोजपुरी कहानी के विकास आ ओह विकास के तेज रफ्तार।

अइसे त, पिछला दू दशक में, भोजपुरी के साहित्य मात्र में, गुण आ परिमाण दूनू दृष्टि से, अजब के बढ़न्ती भइल बा। बाकिर जइसन रचनात्मक विकास कहानी का विधा में भइल बा, आ जवना तेजी से भइल बा, ओइसन साइत आउर कवनो विधा में नइखे हो सकल। भाव-भूमि, कथ्य, शिल्प आ शैली में जवना तेजी से बदलाव भोजपुरी कहानी में आइल बा ऊ साँचो हैरत में डाल देबेवाला बा। भोजपुरी में कथा-रचना के गुणात्मक स्तर आज अइसन ऊंचाई पर पहुँच चुकल बा कि ओकरा के दुनिया के कवनो भाषा के कथा-साहित्य का इर्द-गिर्द आसानी से राखल जा सकत बा।

पिछला दू दशक का दौरान, हमार एक दर्जन कहानी भोजपुरी पत्र-पत्रिकन ('भोजपुरी', 'भोजपुरी कहानियाँ', 'भोजपुरी कथा-कहानी' आ 'चाक') में समय-समय पर प्रकाशित भइल बा। बाकिर आज जब हमरा अपना भोजपुरी कहानियन के संकलन प्रकाशित करे के विचार भइल त हमरा सामने समस्या खड़ा हो गइल। समस्या ई खड़ा भइल कि तब जवन रचना काफी अच्छा लागत रहे, आज उहे, भोजपुरी के एह

विकसित रचना-परिवेश में, दब लागे लागल। एह बदलल रचनात्मक मानसिकता में, हमरा खुदे अपना बारह कहानी में से आठ गो के छाँट देवे के पड़ल ह। आ जे चार गो कहानी चुनाइल बा, ओहू में से, दू गो ('तोहफा' आ 'बयान') में कुछ संशोधन करेके पड़ल ह आ ए गो (खरोंच) के पुनर्लेखन करेके पड़ल ह। एह चार में के ए गो कहानी ('गुरु दक्षिणा') काफी चर्चित आ कई जगह सम्पूर्णत: उद्धृत हो चुकल बा; आ एकर हिन्दी, बंगला आ असमिया में अनुवादो छप चुकल बा; बलुक हिन्दी-अनुवाद त मूल भोजपुरी में छपे के पहिलहीं छप चुकल बा। एही से एह कहानी में कुछ फेर-बदल नइखे कइल गइल, हालाँकि हमरा अइसन महसूस भइल बा कि एह कहानी के सपाटबयानी आज के विकसित शिल्प-विधान के बहुत अनुकूल नइखे रह गइल। एह संग्रह के ए गो कहानी ('झूठ') एही संग्रह में देवे खातिर लिखाइल ह, आ एकरा पहिले आउर कतहीं नइखे छपल।

अब, प्रस्तुत रूप में ई पाँचो कहानी भोजपुरी कहानी के विकसित रचनात्मक स्तर के प्रतिकूल ना पड़ी, अइसन हमरा विश्वास बा।

—*पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह*

कविकिंकर कुटीर
शीतलपुर बाजार, सारन, बिहार
हाल मोकाम : २, ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना-१
ईद, १९८४ ई०/1 जुलाई १९८४ ई०

गुरु-दक्षिणा

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के साइन्स कॉलिज के प्रिंसिपल डॉक्टर करमरकर सोचलन कि कॉलेज के विज्ञान-यंत्र खुदे पसन्द कर के कीनल जाव। एह खातिर ऊ पाँच हजार रुपया ले के कलकत्ता चल पड़ले। एगो सूटकेस में ऊ आपन कपड़ा आ जरूरी सामान के साथे पाँच हजार रुपया के नोट के गड्डी भी रख लेले आ पहिला दरजा के टिकट ले के आधा रात के गाड़ी में बनारस कैंटोनमेंट टीसन पर सवार हो गइले। एगो बेंच पर ऊ आपन बिस्तर लगवले आ ओही पर सूटकेस रख देले। एकरा बाद ऊ ठाट से सूत गइले।

भोरे जब उनकर नींद खुलल त गाड़ी एगो टीसन पर खड़ा रहे। ऊ जब आपन सूटकेस खोलल चहलन त देखलन कि उनकर सूटकेसे गायब बा। ऊ बड़ा फेर

में पड़ले। कलकत्ता का ओर बढ़स कि इहईं से कौनो ट्रेन से वापस जास। संयोग से उनकर मनी बेग उनका पासहीं रह गइल रहे, जेमें आवे-जाये के खरचा के लाएक रुपया रहे, बाकिर कपड़ा आ सामान कोने खातिर पाँच हजार रुपया त ओही बकसा में रहे। कलकत्ता पहुँचला पर बदले खातिर कपड़ा तक उनका पास ना रह गइल रहे। बाकिर फेर कुछ सोच-बिचार के ऊ कलकत्ते जाए के तय कइलन। ऊ पुलिस के खबर दे के बेकार के बवाल खड़ा कइल अच्छा ना समुझले, काहे कि रुपया त अब मीले से रहल।

हबड़ा टीसन पर उतर के ऊ एगो टैक्सी कइलन आ अपना इयार प्रोफेसर एस. पी. मुखर्जी के इहाँ चल पड़ले। प्रोफेसर मुखर्जी से मिलला पर ऊ आपबीती उनका से कह सुनवले आ पाँच सौ रुपया उनका से उधार लेले। ओही रुपया से ऊ अपना खातिर कुछ कपड़ा आ जरूरी सामान किनले आ चार सौ रुपया बेयाना दे के कॉलेज खातिर वैज्ञानिक यंत्र कीन लेले, आ ओह यंत्र सब के पार्सल से भेज देबे के आर्डर दे देले। बाकी रुपया खातिर ऊ दूकानदार के बिल भेज देबे के कहले। प्रोफेसर मुखर्जी का साथे रहला से उनका कवनो दिक्कत ना भइल।

सब काम खतम क के ऊ तीसरा दिने आधा रात के गाड़ी से बनारस खातिर रवाना भइले। अबकी बार

ऊ एगो छोटहने चमड़ा के सूटकेस किनले रहले। ओकरा के ऊ अपना सिरहाने तकिया के नीचे दबा के रख लेले रहले। भोरे जब नींद टूटल त पर-पाखाना से निपट लेवे के खेयाल से ऊ बेंच के नीचे उतरले। उनकर गोड़ एगो बकसा से ठेकल। ऊ देखस, त ई त उनकर उहे बकसा रहे जे चोरी चल गइल रहे। चाभी उनका पास रहबे कइल। तुरते खोल के देखे लगले। देखलन कि उनकर सभ सामान जइसे के तइसे रखल बा—तनिको एने-ओने नइखे कइल गइल। रुपया भी पूरा के पूरा बकसा में मौजूद। हँ, उनका नाँव के एगो मोहरबन्द लिफाफा सब सामान का ऊपर रखल बा।

ऊ लिफाफा खोल देलन। ओमें से एक सौ रुपया के एगो नोट आ एगो चिट्ठी निकलल जे उनही के लिखल गइलरहे। ऊ चिट्ठी पढ़े लगले—

गुरुजी !

अपने के चरन में हमार प्रणाम पहुँचे। जब हमार साथी लोग एह बकसा के हमरा आगे रखलन त हम देखनी कि ओकरा ऊपर अपने के नाम आ पता लिखल बा। हमनो के चोरी आ डकैती जइसन नीच करम में लागल बानी जरूर, बाकिर जबना गुरुजी के छत्रछाया में रहके हम एम-एस-सी. तक के पढ़ाई पढ़नी, उनकर चीझ हमरा चाहे हमरा साथी

लोग से लूट लेहल जाय, हम एकरा के ना सह सकीं। हमनी अइसने काम में लागल बानी जवना के अपना के सभ्य कहे वाला समाज नीच काम बूझेला; बाकिर अइसन काम करे में हमनी के मजबूरी बा। हम खुदे एम. एस-सी. हईं; हमरा साथी लोग में केहू भी ग्रेजुएट से कम नइखे। तबहूँ हमनी अइसन काम में लागल बानी। काहे? काहे कि हमरा सामने सवाल बा—हम जीहीं त कइसे? पापी पेट खातिर हमरा कुछ ना कुछ त करहीं के बा; बाल-बच्चा के परवरिस कहाँ से होखो? पढ़ाई-लिखाई में त हमनी में से जादे लोग अपना घरहूँ के आटा गील कर चुकल बा। पढ़-लिख के तइयार भइला का बाद हमनी का देखतानी कि हमनी खातिर कवनो कामे नइखे। फेर हमनी का करीं त का?

अपने के आज्ञाकारी,

अपनहीं के एगो चेला।

फेन—एही लिफाफा में गुरु-दक्षिणा के रूप में अपने का एक सौ रुपया के एगो नोट पाएब। हम रउरा के बिसवास दिलावत बानी कि ई रुपया अमीर लोग के खजाना से लूटल गइल बा। हमनी का गरीबन के कबहीं ना सताईं। एह से एकरा के कबूल करे में अपने का संकोच मत कइल जाई।

प्रिंसिपल डॉक्टर करमरकर जब हिन्दू विश्व-विद्यालय के अपना क्वाटर में घुसले, त उनकर चेहरा उतरल रहे, आ ऊ अपना आ ओह बेचीन्हल चेला का पेशा पर गंभीर हो के सोचत रहले।

□

तोहफा

गाड़ी के डिब्बा में अलग-अलग बइठल लोग पर उड़त नजर डालत नीलिमा प्लैटफॉर्म पर नजर गड़ा देली। उनका मन में भरोसा रहे कि उनकर पति प्रोफेसर प्रफुल्ल गाड़ी खुले का पहिले जरूर लउक जइहन। दू महीना पहिले आ आज में जवन फरक पड़ गइल बा ओकरा खातिर केकरा के दोस दिहल जाव? बियाह का बाद उनकरा पति के चेहरा पर खुशी के जवन चमक आ उनका आँखिन में नया जिनगी के सपना पँवड़त रहे, ऊ आजो उनका दिमाग में ताजा बा। पहिला रात के ऊ मुस्का के कहले रहलन, 'साहित्य के प्रोफेसर बड़ा भावुक होला, तूँ विज्ञान पढ़ले बाड़ू, एह से कहीं हमरा के समझे में तोहरा से गलती ना होखे के चाहीं।' एह बात पर ऊ मुस्का भर देले रही।

गाड़ी सँसरे लागल। नीलिमा के एगो सहजोरे धक्का लागल आ उनका आँखिन के कोर से लोर छलक गइल। गाड़ी के रफ्तार तेज भइल आ उनका आँखिन के कोर में टँगा गइल कुछ हिलत हाथ आ कुछ चिन्हार-अनचिन्हार चेहरा।

ऊहे घर, जहाँ जनमली आ पोइसली, एकदम पराया लागत रहे। बाबूजी, जेकरा से कवनो बात कहे में हिचकिचाहट ना रहे, उनका से बतिआवे में एगो बोझा बुझात रहे। बात कुछ ना, बाकिर काँच धइली लेखा टूट गइल रहे ऊ रिश्ता जवना के जनम-जनम के बंधन कहल जाला। पति अपना पत्नी के नइहर चल जाए के कह देवे? ई कह देवे कि तूँ हमरा खातिर मर गइलू?

नीलिमा ईहे सब सोचत अपना कमरा में पड़ल रहस। उनका बाबूजी के बोझा बढ़ गइल, आ एक दिन जब उनका से बेटी के बेचैनी ना सहाइल त कहलन, 'बेटी अबहीं तोहरा जिनगी के लमहर राह तय करे के बा। सब बिसार के नया राह त धइल जा सकेला। अब तोहार उदासी आ दरद हमरा नइखे देखल जात। तोहरा में का कमी बा, नीमन से नीमन लड़िका तोहरा से बियाह करे खातिर तइयार हो सकेला।' नीलिमा के आँख डबडबा गइल। ऊ अपना

के बटोरत कहली, 'नया राह धइल ना जाला, धरा जाला बाबूजी।'

उनकर बाबूजी अबहीं एक बात के जबाब देबहीं के चाहत रहस कि ऊ कहली, 'बाबूजी, हमरा के मेडिकल पढ़े के इजाजत दे दीं। पढ़-लिख गइला पर हमरो जरूरत समाज के हो जाई आ हमहूँ अपना खातिर जरूरी हो जाएब।'

नीलिमा के ई बात सुनते उनका बाबूजी के चेहरा पर एगो खुशी के लहर दउड़ गइल आ आवे वाला समय के तस्वीर दिमाग में उभर आइल।

डाक्टरी पास करते नीलिमा के पहिला बहाली बनारस में भइल। बनारस के नाम सुनते उनका सूखल घाव के खरोंच लागल आ ऊ तिलमिला गइली। विधना नाच नचावेला ! अबहियों कवनो खेल बाकी बा ! ईहे सोच के ऊ बनारस का अस्पताल में पद-ग्रहण क लेली।

थोड़हीं दिन में नीलिमा के सूझबूझ, मधुर स्वभाव आ इलाज के खूबी के चर्चा शहर में होखे लागल।

एक दिन एगो आदमी उनका के प्रोफेसर्स कॉलोनी में एगो मरीज देखे खातिर बोलावे आइल। प्रोफेसर्स कॉलोनी के नाम सुनते डाक्टर नीलिमा के चेहरा के रंग बदल गइल आ उनका दिमाग में तूफान उठे

लागल। हिरदया के दरद से बेसुध होखे लगली। कहीं कवनो इयाद के दरद टीसे लागल।

'डाक्टर साहेब, जल्दी करीं ना त दूनों जान के खतरा बढ़ जाई। मेम साहेब के बच्चा होखे वाला बा आ बहुत तकलीफ बढ़ गइल बा। तनिको देर कइला से जान जा सकेला', ऊ आदमी बोलल।

नीलिमा एकबारगी अपना के सँभार लेली आ मने-मने बुदबुदइली 'डाक्टर के कर्तव्य बड़ होला, भावना ना।' गाड़ी पर बइठत कहली, 'चल, तेज चल।'

गाड़ी प्रोफेसर्स कॉलोनी में एगो क्वार्टर का सामने रुकल। ऊ तेजी से उतरत अन्दर चल गइली। एगो कमरा में मेम साहेब के दू-चार गो औरत घेरले खड़ा रहली सन आ ऊ दरद से चिचियात रहली।

उनका लगे जाते ऊ जाँच शुरू कर देली। जाँच करते ऊ घबड़ाइल आवाज में कहली, 'इनकर पति कहाँ बानी ? हमरा से दू मिनट बतिया लीं।'

नीलमा मरीज के ओजवे छोड़ के कमरा से बाहर निकल अइली। उनकर नजर बाहर खड़ा प्रोफेसर प्रफुल्ल पर पड़ल। ऊ अइसे चिहइली जइसे उनकर नजर साँप पर पड़ल होखे। प्रफुल्ल के चेहरा करिया तावा लेखा हो गइल। केहू के मुँह से बकार ना निकलल। एक-दोसरा के अजनबी लेखा देखे लागल लोग।

बगल में खड़ा एगो आदमी कहलस, 'ईहें का हईं प्रोफेसर साहेब । ईहें के पत्नी के केस बा ।'

नीलिमा अपना के बटोरत बुदबुदइली, 'क्वाटर बदल गइल ।' फेर बोलली, 'प्रोफेसर साहेब, एगो जरूरी बात पर फैसला लीं । ई अर्जेन्ट सिजेरियन के केस बा । मरीज के तुरत ऑपरेशन थियेटर में ले गइल जरूरी बा ।'

प्रोफेसर साहेब का मुँह से बकार ना निकलल । ऊ मूड़ी हिला के आपन स्वीकृति दे दिहले ।

नीलिमा फोन का ओर बढ़ गइली । क्लीनिक मे जरूरी हिदायत देत जल्दी से अम्बुलेंस भेजे के आदेश दिहली ।

× × × ×

अपना मन के उठत तूफान के दबावत डाक्टर नीलिमा बिना कुछ कहले ऑपरेशन थियेटर में घुसली । एक घंटा के बाद नीलिमा लमहर साँस लेत ऑपरेशन थियेटर से बाहर निकलली । बाहर खड़ा प्रफुल्ल के भर-पूर नजर से देखत कहली, 'प्रोफेसर साहेब, बेटा जन-मला के मुबारकबाद लीं । जच्चा-बच्चा दूनों के जान बाँच गइल । भगवान हमार मरजाद रख लेलन ।' छन भर थथम के कहली, 'अच्छा अब हम चलीं, दवाई समय पर नर्स देत रही ।' ई कहत नीलिमा ओजवाँ से तेजी

से बढ़ गइली आ बरामदा के नीचे उतर के गाड़ी में बइठ गइली ।

उनका बइठते प्रोफसर प्रफुल्ल सौ-सौ के दस गो नोट काँपत हाथे उनका हाथ पर रख देलन। नीलिमा ओह नोटन के चट दे प्रोफेसर साहेब के पाकेट में खोंसत कहलो, 'रउरा बियाह के समय के बकाया हमार तोहफा।' आ अवाक भइल प्रफुल्ल के छोड़त गाड़ी तेजी से क्लीनिक के गेट पार क गइल ।

□

बयान

गुलजारनगर शहर के अइसन महल्ला ह जहाँ किरिन के झँकले पर जिनगी शुरू होला। ई लमहर ओहदा वाला सरकारी अफसर, डॉक्टर, इंजीनियर आ पूँजीपति लोग के महल्ला ह। अपना में बिलकुल जिनगी जोए वाला लोग दोसरा के जिनगी में झाँके के कोसिसो ना करेला लोग।

एक दिन के बात ह, अबहीं किरिन ना फूटल रहे। लोग जगलो पर बिछवना पर आँख मुँदले पड़ल रहे। तले आग .... आग ... के जोर-जोर से चिल्लाहट सुनाइल। आग लगला के खबर आग लेखा फइल गइल। कुछ लोग बिछवना पर पड़ल-पड़ल ई आहे लागल कि ई आवाज केने से आवत बा, आ कुछ लोग दुआरी पर ठाढ़ हो के तेजी से दउड़त लोग के सवाल भरल नजर

से देखत रहे। देखत-देखत कुछ लोग रमेश बाबू के दुआरी पर इकट्ठा हो गइल।

भीड़ में केहू फुसफुसाइल—"रमेश बाबू के पतोह बाथ-रूम में भीतर से केंवाड़ी बन्द क के देह में आग लगा लेले बाड़ी।" ई सुनते कुछ लोग रमेश बाबू के घर में घुस के बाथ-रूम के दुआरी पर पहुँच गइल।

बाथ-रूम के केंवाड़ी पर धक्का देत-देत रमेश बाबू थाक के बइठ गइल रहलन आ उनकर बेटा सुबोध बाथ-रूम से आवत चिराइन महक से पागल भइल माथा पीटत रहलन। ऊ रह-रह के चिल्लास—"तूँ ई का कइलू सुनीता; हमरा सुनीता के बचा लीं लोग, ना त हमहूँ जीयत ना रहेब।"

कुछ लोग आगे बढ़ के, जोर-जोर से केंवाड़ी पर लाते मारे लागल।

लात मारत-मारत केंवाड़ी टूट गइल। लोग बाथ-रूम में घुसल आ सभे के मुँह से एक साथे आह निकल गइल। देखेवाला के करेजा काँप गइल आ आँखिन से लोर झरे लागल। सुबोध एकबारगी पागल लेखा चिल्लइलन—सुनीता हमार ''''' हमार सुनीता, आ अँक-वारी में भर लेलन झँउसाइल सुनीता के देह।

केहू आगे बढ़ के सुबोध के बाँह खींच के अलगा करत कहलस—"अब सुनीता ना हई, ई लाश ह, औरत

के लाश।" ई कह के ऊ आदमी एगो चद्दर से उनकर लाश तोप देलस। कुछ लोग माथा पर हाथ धइले ठाढ़ रमेश बाबू के ढाढ़स बँधावे आ ई कह के समझावे लागल कि, "होनी के केहू टार न सके। जेकरा जवना विधि जाये के होला, चलिये जाला।"

रमेश बाबू चुपचाप खड़ा रहलन। रह-रह के उनको आँखिन में लोर झाँके बाकिर ऊ टपकत ना रहे।

एगो आदमी रमेश बाबू से कहल—"अब का सोचत बानी। रोए आ अफसोस करे के त जिनगी भर बा। लाश के दाह-संस्कार करे के तुरन्त इन्तजाम करीं। देर भइल आ अगर पुलिस पहुँच गइल त लफड़ा में पड़ जाएब।"

ई बात सुन के रमेश बाबू के देह में बिजली के करेंट दउड़ गइल आ उनका चेहरा के रंग एक-ब-एक बदल गइल। ऊ जल्दी जल्दी लाश ले जाए के इन्तजाम में लाग गइलन आ लोग सुनीता के दरदनाक मउअत के तह में पहुँचे के कोशिश करत, अपना-अपना घरे लवटे लागल। कुछ लोग एहू से जल्दी भागल कि पुलिस के पहुँच गइला पर नाहके गवाही में फँसे के पड़ी।

रमेश बाबू बगल में ठाढ़ अपना एगो मातहत कर्मचारी के कहलन—"तू लोग लाश ले के चल जा

आ हम एजवे रहब। अगर कवनो बात होई त हम निपट लेब।" ऊ आदमी चुपचाप अपना विभाग के बड़का हाकिम के हुकुम सुनत रहल।

रमेश बाबू तनिक रूक के फेरू कहलन—"तोहरा लोग के साथे सुबोध जइहन। ऊहे आग दिहन।"

उनकर बात सुन के ओह आदमी के चेहरा पर तरह-तरह के भाव उग आइल । ऊ चहलस कि कह दे, 'अब सुबोध आग का दीहन, आग त ऊ अपने दे लेली।' बाकिर ओकर जबान ना खुलल ।

तीन-चार गो कर्मचारी के साथे सुबोध मोटर में बइठ गइलन आ पीछे के सीट पर उज्जर चद्दर में लपेटल सुनीता के लाश लदा गइल ।

रमेश बाबू गते से मोटर में मूड़ी घुसा के कहलन—'अगर घाट पर कवनो तरह के गड़बड़ी होखे त हमरा के फोन कर द ह।"

सभे चुप्पी सधले रहल। मोटर खुलल आ तेज रफ्तार में भागे लागल।

रमेश बाबू अपना ओसारा पर माथा झुकवले टहले लगलन। ऊ रह-रह के सड़क के ओर कँपसल नजर से देख लेस। ऊ रह-रह के ई सोचत रहले कि अगर

घाट पर पुलिस पहुँचल होई आ लाश जरावल रोक दी त केकरा-केकरा से मदद लेबे के होई। उनका मन में आइल कि ऊ फोन क के अपना दोस्त पुलिस अफसर के खबर क देस। बाकिर फेरू अपना के कड़ा करत सोचलन, 'देखल जाई, लाश जर गइला पर भला का होई।'

ऊ घड़ी देखलन। आठ बजल रहे। सुरुज के किरिन के गरमी बढ़ गइल रहे। महल्ला के लोग अपना-अपना काम-काज पर जाये के तइयारी में अझुरा-इल रहे।

रमेश बाबू के मोटर लवट के आइल। मोटर देखते उनका चेहरा पर चमक पसर गइल। मोटर से सभे उतर के जसहीं रमेश बाबू लगे पहुँचल तसहीं ऊ पुछलन, "केहू ओजवाँ पहुँचल ना नू रहल ह?"

"जी ना।" एगो आदमी जबाब दिहल।

एगो कर्मचारी पुछलस—"अब त हमनी के हुकुम बा नू? चलीं सन।" रमेश बाबू सहज भाव से कहलन, तनी देर ठहर जा लोग। देख, कहीं कवनो जरूरत पड़े।" ई कह के ऊ ड्राइवर के ओर मुँह करत कहलन—"एह लोग के कुछ जर-जलपान के इन्तजाम कर।"

रमेश बाबू सौ रुपया के नोट ड्राइवर के ओर बढ़ा देलन।

सब लोग रमेश बाबू के हुकुम पर बइठ गइल।

सुबोध एकोरा माथा झुकवले, आँख मुँदले बइठल रहलन। उनका दिमाग में रह-रह के ओह नाटक के दृश्य चक्कर काटत रहे जवना में ऊ आ सुनीता अभिनय कइले रहे लोग। नाटक के अभिनय परेम में बदल गइल रहे। आ जब कौलेज भर में परेम के चरचा होखे लागल त ऊ लोग कचहरी में जा के बियाह क लेलन। किरानी के बेटी से बियाह कइला खातिर आ दान-दहेज ना मिलला से उनकर बाबूजी नाराज रहलन बाकिर माई के ममता आ अड़ गइला से ओह लोग के घर में रहे के हुकुम मिलल, बाकिर उनका बाबूजी के मन में कबो सुनीता खातिर नेह आ दुलार ना उपजल। रोज-रोज के गारी, ठोना आ नफरत झेलत रहली सुनीता आ ऊपर से मुसकात रहली। बाकिर भीतरे-भीतर खंखड़ होत जात रहली। बाप-मतारी के कुल-खानदान के गारी सुन के उनका स्वाभिमान के धक्का लागत रहे आ आखिर ऊ एह दुनिया से नाता तुड़िए लेली। उनका ई बुझात रहे कि अगर ऊ पढ़-लिख के बेकार ना रहतन त उनका एह मउअत के नाटक में अभिनय ना करे के पड़ित। ऊ आपन हाथ लोहू में सनाइल महसूस करत रहलन।

उनका बुझात रहे कि ऊ खूनी हउअन। उनका अपना आप से नफरत हो गइल। टेलिविजन, उनका अपना बाप के सजल सँवारल बँगला, मोटर, फ्रीज सब कुछ काटे दउड़त रहे। सब में से चिराइन मँहक निकलत रहे।

"ई राउर बेटा हउअन ?"

ई आवाज सुनते सुबोध के सहजोर झटका लागल आ उनकर आँख खुल गइल।

उनका सामने खड़ा रहलन उनकर बाबूजी आ एगो पुलिस-दरोगा।

"हँ, इनके मेहरारू रहली ह।" ई कहत रमेश बाबू ड्राइंग-रूम में घुस गइलन आ उनका पाछा-पाछा दरोगो जी चल गइलन।

सुबोध फेरू आँख मूँद लेलन। उनका दिमाग में उठत आँधी के झोंका बढ़ गइल।

पाँच-दस मिनट के बाद दरोगा जी आ रमेश बाबू ड्राइंग-रूम से निकलल लोग। उनका दुआरी के सामने कुछ लोग खड़ा रहे। एके गो सवाल सभे के मन में मथत रहे कि रमेश बाबू पतोह के मउअत के बारे में का बयान देत बाड़न ? उनका के दरोगा थाना ले जाता कि ना ?

दरोगा जी ओसारा में रखल कुरसी पर बइठ गइलन। ऊ कागज निकललन आ बयान लेबे खातिर

कलम खोलत ऊँच आवाज में पुछलन—

"कहाँ रखल रहे गैस के चूल्हा ?"

रमेश बाबू कहलन—"बाहर ओसारा में।"

"रउरा पतोह के जरत पहिले के देखलस ?"

"हमार बेटा सुबोध। जब उनकर जरल देख के ऊ चिल्लइलन त हमनी के ओजवा दउड़ के गइनी।" ई कहत रमेश बाबू, सुबोध के भाव-भरल नजर से देखलन। बाप के आँखिन में उगल भाव के अरथ बूझत, सुबोध तिलमिला उठलन। बुझाइल जइसे केहू उनका छाती पर चढ़ के बइठल होखे। उनका मन में आइल कि चिल्ला-चिल्ला के कह देस कि सब झूठ बयान बा। बयान लेबे के बा त बाथ-रूम के टूटल केंवाड़ी से आ नाली में बहत सुनीता के मांस के टुकड़ा आ लोहू से ल, आ डेराइल दरद भोगत बाथ-रूम से ल।

उनका आँखिन में नफरत के डोरी तना गइल।

दरोगाजी पुछलन—"रोज भोरे उठ के राउरे मेहरारू चाय बनावत रहली ह ?"

सुबोध नजर झुका लेलन आ कुछ ना बोललन।

उनकर चुप्पी देख के रमेश बाबू के चेहरा पर पसेना चुहचुहा आइल। उनका आँखिन में डर पँवरे

लागल। ऊ अपना के बटोरत कहलन—"बोल बेटा, कह द। अब त जाएवाला चलिए गइल। तोहरा मन के दरद हम बूझत बानी। जे किस्मत में रहेला उहे होला।"

सुबोध बाप के चेहरा पर गौर से देखत कहलन—"जी, उहे सब कुछ करत रहली ह।"

एक-एक क के बाप, बेटा, बेटी आ नोकर के बयान लिया गइल। गवाह के जगह पर रमेश बाबू के मातहत में काम करेवाला लोग के दस्तखत भइल।

दरोगाजी कागज पत्तर समेटत उठलन आ जीप में सिपाही सब के साथे बइठ के चल देलन।

कानाफूसी करत भीड़ आपन राह धइल।

सुबोध अपना बाप के चेहरा पर फइलल चमक देख के नफरत से आपन आँख मूँद लेलन आ अपना भीतर बढ़त अन्हार में सुनीता के खोजे लगलन।

□

झूठ

उनका से तिसरको बेर भेंट हो गइल आ ऊ बड़ा प्रेम से मिलते कहले, 'सुनीं ! रउरा के हम एह काम में बड़ी मदत करब। हमार त जिन्दगी के अब इहे उद्देश्य रह गइल बा कि एह काम में लोग के मदत करत रहीं। जानतानी, एह से समाज सेवा त होइए जाला, मन के बड़ी राहत मिलेला। लीं, हई हमरा पता लीं आ जब चाहीं त हमरा से मिलीं। हम राउर पूरा मदत करब।' कह के ऊ एगो कागज पर लिख के आपन नाम-पता दे दिहले आ हम बिना देखले कुर्त्ता के ऊपरी जेब में रख लिहनी।

उनका साथ के दुनू आदमी उनकर आँख बचा के एक दोसरा के देख के गते दे मुस्कइले स। बाकिर एह से हमरा का। कवन हमरा उनका दुआरी पर जाए

के रहे कि हम कुछ सोचितीं। अगिले स्टेशन पर उनका उतरे के रहे। ऊ खड़ा हो गइले। ऊपर के बर्थ के जंजीर धरत तनी झुक अइले, 'रउआ हमरा बेरादरी के हईं एह से भाइए हईं। कवनो संकोच मत करब। सीधे हमरा किहाँ आ जाएब। हम राउर भरपूर मदत करब। आ राम चहिहें त ....।' तले ले बगल वाला आदमी खइनी पीट देलस आ उनका बड़ा जोर से छींक आ गइल। गाड़ी खड़ा हो गइल रहे। ऊ झट से उतर गइले आ बहरी निकल के हाथ जोड़ दिहले गाडी खुलल आ हमहूँ हाथ जोड़नी। ऊ चिल्ला के कहले—'कवनो संकोच मत करब, जरूर आएब।'

हम लौट के घरे गइनी। काम ना हो सकल रहे, से मन में चिन्ता रहे। एह से उनकर बातो भुला गइल। बाकिर कुर्त्ता फींचे के बेर जब उनकर पता वाला कागज जेब से निकलल त उनका बारे में अनायास सोचे लगनी। कागज देखला से इयाद पड़ल कि उनकर नाम मुंशी रामरतन लाल ह। उनकर घर ...... जाये दीं, पूरा पता जान के का होई।

त एह मुंशी रामरतन लाल से पहिलका भेंट ठीक तिसरके भेंट लेखा रेल के डब्बा में भइल रहे। तब ऊ अपना साथ वाला यात्री लोग से बड़ा प्रभावोत्पादक ढंग से एगो किस्सा छेड़ले रहले। ओह किस्सा में

उनकरो बड़ा महत्व के रोल रहल रहे। एह से हमहूँ उनका ओर आकर्षित हो गइल रहनी। अइसे त हमार आदत ना ह कि हम सहयात्री लोग से ढेर बात-चीत करीं। बाकिर उनकर किस्सा सुने वाला लोग जब अगिला स्टेशन पर उतर गइल त ओह बेंच पर हमहीं-ऊ रह गइनी। सामने वाला बेंच पर एगो औरत, ओकरा संगे एगो बूढ़ देहाती आदमी आ एगो छोट लड़िका रहे। एह से ऊ सीधे हमरा ओर घूम गइले। अपना झोरा से पनबट्टा निकलले आ हमरा ओर बढ़वले। हम हाथ जोड़ के दाँत चियारत बोलनी—'जी, हम ना खाईं।'

मुंशी रामरतन लाल हो-हो क के हँसले, 'रउरा महाराज पूरा सतजुगी बानी। अच्छा करीले। नशा कइल का कवनो नीमन चीज ह? खैर! हमरा के इजाजत दीं।'

'ना! ना! रउरा खाईं! शौक से खाईं!'—हम हँस के जबाब दिहनी।

मुंशी जी मुँह में पान दबा के गमकउआ जर्दा फाँक के हमरा ओरी झुक अइले, 'माफ करब, आज के जमाना में केहू के जात पूछल महाफूहड़ काम बा। बाकिर हम जवना मिशन में निकलल बानी ओह में बिना जात के कामें नइखे चलत।'

हम पूछनी, 'जी, अपने कवना मिशन में निकलल बानी ?'

'जी, हम लड़िका खोजे निकलल बानी। हमार फलाँ जात ह। कवनो बताईं ना लड़िका।', मुंशीजी सीधा बइठ के बोलले। आ खा-म-खाह हमरो आपन जात बतावे के पड़ल। हम बोलनी, 'हमहूँ त रउए जात हईं, आ हमरो निकले के मिशन उहे बा, जवन राउर बा। अब रउओ हमरा के कवनो लड़िका बताईं।'

मुंशीजी बोलले, 'सुनीं, अबगे हम बतावत रहनी हँ, रउआ सुनलहीं होखब कि कइसे-कइसे एगो गरीब बाप एगो बेटी के बियाह में पूरा-पूरी उजड़ गइल आ कइसे-कइसे साधु हो के एह विशाल संसार में हेरा गइल। एह से हम ई ठान लेले बानी कि अपना बेटा के बियाह में ना त एक पइसा लेब ना बेटी का बियाह में एक पइसा देब। एही से हमरा तनी दिक्कत हो रहल बा। लड़िकवा अबहीं पढ़त बा, एह से ओकर बियाह नइखीं करत। ना त दुनियाँ के देखा देतीं कि कइसे बिना एको पइसा तिलक-दहेज लिहले बियाह कइल जा सकत बा। बाकिर अबहीं त लइकिये के बियाह के बारी बा। एह में त हम एको पइसा तिलक-दहेज ना देबे के किरिया खइले बानीं एह से रउरा जो ओइसन

लड़िकावाला भेंटाय त बताईं। हमरा से पूछब त हमरा अबहीं ले ओइसन पार्टी ना मिलल ह। आ हम रउरा के बताएब त ओइसने पार्टी खोज के बताएब।'

हम उनका से प्रभावित हो गइल रहनी। अबहीं आउरू बातचीत होइत कि उनकर स्टेशन आ गइल आ ऊ उतर गइले। हम मन में सोचनी कि हमहूँ कइसन भकुआ बानी कि ना उनकर पता लेनी ना आपन पता देनी। अब जो बिना तिलक-दहेज बाला लड़िका मिलबो करी त एक-दोसरा के आदमी बताई त कइसे बताई। खैर, बात आइल-गइल हो गइल।

एही मुंशीजी से हमरा एगो लड़िका वाला किहाँ दोसरा हाली भेंट भइल रहे। जब हम लड़िका वाला किहाँ पहुँचनी त ओह घरी मुंशी रामरतन लाल के बड़ा जोर भाषण चलत रहे। आदर्श के आ जीवन के नया मान्यता के लेके ऊ बोलले चल जात रहले। आ लड़िका वाला चुप भइल उनकर उपदेश पीयत चल जात रहे। हमरा के मुंशीजी देखलन आ बड़ी जोर से हँसले, 'आईं आईं, रउओं पहुँचिये गइनी। ठीके बा। रउओ लड़की बड़ले बिया त रउआ काहे ना आएब। जहाँ गुड़ होई उहाँ चिंउटा पहुँचबे करी।

लड़िका वाला मुंशीजी से पूरा प्रभावित लागत

रहे। एह से हम जल्दिए उठ गइनी। हमहूँ मुंशीजी के आदर्शवाद के दिल से स्वागत करत रहनी। लड़िका वाला के एह लड़िका का बाद तीन गो बेटी रहली स। एह से उनका ई आदर्शवाद पूरा भावत रहे। ऊ पूरा सहयोग देत बोलले, 'देखीं, हम त बिना तिलक-दहेज के शादी कर लेब, बाकिर हमरा लड़की का बेर कवन लड़िका वाला अपना कान्ह पर जुआठ धरे दी ?"

मुंशी जी हँसले 'धरे दी नू। असहीं-असहीं नू होई। खरबूजे के देख के नू खरबूजा रंग पकड़ो।' हमहूँ हँसत चल अइनी। बाद में पता चलल कि ऊ शादी मुंशीजी किहाँ बिना दिलक-दहेज के हो गइल।

तिसरका बेर के भेंट के बाद जब उनकर पूरा पता हमरा पास बेर-बेर कागज उलटत में हमरा मिल-मिल जाय त मन में आइल कि चलीं मुंशीजीउआ किहाँ, मदत करे के बड़ा आश्वासन देले रहे। एह से एक दिन साँचहूँ मुंशीजी किहाँ चल गइनी। मुंशी देखले त बडा स्वागत कइले। हम उनका से बोलनी, 'मुंशीजी, बुझाता कि हम रउरा आदर्श पर ना चल सकब। बिना तिलक-दहेज के केहू बातो करे के तैयार नइखे होखत। एह से हमरा के रउरा मदत त करीं, बाकिर अपना आदर्श के अब हमरा खातिर भुलाइए के मदत करीं।'

मुंशी जी हमरा लड़की के फोटो देख के कहले,

'जो, लड़किया त काफी ठीक बिया। एकर बियाह त अपने लड़िका से बिना तिलक-दहेज के क लेब। हमरा लइकवो के डाक्टरी के पढ़ाई खतम हो गइल बा। बाकिर रउआ ई बताईं कि रउआ एह शादी में का खरच करे के एस्टीमेट बा।'

हम बोलनी, 'हमरा एस्टीमेट के का लेले बानी। बीस भर के गहना दे देब। लड़िका बाला के खर्चा खातिर दस-पन्द्रह हजार नगदो दे देब। पाँच-छव हजार दानो-दहेज में लागी। लड़की खातिर कुछ त करहीं के पड़ी। फेर घर पर बर-बरियात के स्वागत-सत्कार बा।' अबहीं हमार बात पूरो ना भइल रहे कि उनकर उहे समधी जिनका किहाँ ऊ बिना तिलक-दहेज के अपना बेटी के शादी कइले रहले, एगो आउर पार्टी का साथे आ गइले। मुंशीजी हमरा के छोड़ के उनका ओर लपकले। फेर ले आके बइठवले, आ अपना समधी के कुछ बोले का पहिलहीं हमार परिचय करावे लगले। परिचय करावत-करावत बोलले, 'इहाँ के एक लाख रुपया के एस्टीमेट लेके आइल बानी। बाकिर हमार त एगो आदर्श बा। हम त एको पइसा दान-दहेज नाहिए लेब। बाकिर एगो बात बा। बबुआ के हाउस सर्जनी अब खतम होखे पर बा आ ऊ विदेश जाए के तइयार बा। हमरा अइसन फक्कड़ आदमी के पास

रुपया होखे के सवाले नइखे कि हम विदेश जाये के खरचा देहब। अब जे आपन दामाद बनाई ऊ बूझो।'

उनकर समधी भकुआइल ताकत रहले तले साथ में आइल लड़की वाला तपाक से बोलल, 'ए मुंशी रामरतन लाल जी, रउरा आदर्श के रक्षा त हम करबे करब, अपना दामादो के इच्छा पूरन करब। रउरा अब हमरा के जबान त दीं।'

मुंशी रामरतन लाल हमरा ओर कनखी से तकले। तले हम उठ गइल रहीं। हमरा के केहू बइठहूँ के ना कहल आ हम उहाँ से चल अइनी। फेर का भइल हमरा पता ना चलल। हमरा लड़की के दोसरा जगह शादी हो गइल, एह से हमरा पतो लगावे के जरूरत ना पड़ल। आ हम मुंशी रामरतन लाल के भुला गइनी।

बरिसन बाद हमरा लड़िका के बहाली पुलिस विभाग में हो गइल रहे आ ऊ जेने-तेने गावाँगाईं थाना पर पोस्ट होखे लगले। जब उनकर नया पोस्टिंग मुंशी रामरतन लाल के थाना में भइल त हमरा उनकर इयाद पड़ल। एक बेरा हमरा उहाँ जाये के जरूरत पड़ल त हम उनका दुआर पर चल गइनी। हाय राम! ई का! ओह घड़ी के चमकत मकान पूरा खडहर हो गइल

रहे। दुआर पर केहू ना रहे। बगल वाला से पुछनी त मालूम भइल कि उनकर लड़िका फाँसी चढ़ गइले आ मुंशी रामरतन लाल जेल कटला के बाद साधू होके केनियो निकल गइले। मेहरारू मर बिला गइली आ अब घर में केहू नइखे।

आगे पूछे के मन ना कइल, एह से लड़िका के क्वाटर पर लवट अइनी। हमरा के उदास देख के थाना के जमादार पुछलस त हम रामरतन लाल के बारे में बतवनी। जमादार हँसल, 'त रउरा रामरतन लाल से हमदर्दी कवना बात के हो गइल? भारी जालिया आदमी रहल ह ससुरा, पूरा-पूरा ढोंगी आ क्रिमिनल। ऊहे काहे, पूरा खनदनवें उहे रहल ह। धोखा दे के मुफ्त में लड़की के बियाह कइलस। लड़कियो बापे लेखा निकलल। सब कब्जा में क के सास-ससुर के दुर्गत बना दिहलस। तीन गो ननद रहली स। ई संयोग कहीं कि कसहूँ तोनों के बियाह हो गइल रहे। आज बाप-मतारी, बेटा-पतोह अछइत बुढ़ापा में बेटियन का सहारे जीयत बा लोग। आ ई देखीं कि कम्पाउन्डर बेटा के एम. बी.-बी. एस. डाक्टर बता के अच्छा-अच्छा घर में तीन गो बियाह कइलस आ खूब दान-दहेज वसूललस। दू बेर त निभ गइले। बाकिर तिसरका बेर धराइए गइले ससुर। बेटवा त दवा-दारू खूब जानते रहे। दूनों बाप-बेटा पतोहिया के जहर दे द स।

गाँव के लोग के कुछ बुझइबे ना करे। बाकिर भगवानो से अनेत नाहिएँ देखल जाला। तिसरकी बड़ा जबरजंग रहे। कम्पाउन्डर साहेब के पियावल जहर पर तुरते ना मरल। मरल जाके अस्पताल में। मजिस्ट्रेट के सामने बयान दके मरल। एह में बेटा राम त फांसी चढ़ गइलन आ बाप जेल भोगलन। सुनीले जे बगुला-भगत लेखा मुंशिया साधू हो गइल बा।'

हमरा मुँह् से बकारे ना निकलल। हमरा दिमाग में मुंशी रामरतन लाल के पहिलका बेर के रेल में के भेंट कौंध गइल जवना में ऊ तिलक-दहेज के विरोध में लम्बा भाषण देले रहले। हमरा इयाद पड़ल कि ऊ एगो अइसन बाप के आँख देखल किस्सा सुनवले रहले जेमें लड़की के बाप आपन सब कुछ बेंच के लड़िका वाला के दहेज देले रहे आ बियाह के बाद समधी से मिलनी साधू वेश में क के समधी के लाख समझवला आ रोकला के बादो घर से निकल गइल रहे।

जमादर के ओर हम घूम के तकनी। जमादार के चेहरा पर घृणा के एगो भाव उभर आइल रहे। हम अपना के दृढ़ क के बोलनी—'झूठ ! झूठ !! झूठ !!!'

जमादार के कुछुओ ना बुझाइल। ऊ अकबकाइल हमरा ओर ताके लगले।

□

खरोंच

अनकस बरल त किशोर बाबू गते से गोड़ खींच के रजाई के भीतर क लेहले। ठंडा से देह अँगरत जात रहुए आ मन में कइसन त कँपकपी समाइल रहुए। रमेसवा त पुलिस हवालात से छूट गइल बाकिर इनकर त मन बन्हाइए गइल। सिगरेट पर सिगरेट फूँकत ई सोचे लगले—पूरा जिन्दगी बेमजा हो गइल। कलक में जीयत देह के खींचत गइले आ रमेसवा के पोस-पाल के सेआन कइले। रोजगार कइले, कोठी बनल, बड़का अम्पाला गाड़ी लियाइल, बैंक में अथाह पइसा जमा भइल। बाकिर ई सब कवनो शौक से थोड़हीं भइल। भइल रहे इरखा में।

बाकिर आज काहे त सब गड़बड़ हो गइल बा। अतना दिन के जोड़ल अथाह सम्पत्ति, मान-प्रतिष्ठा सब

बस एके छन में स्वाहा हो गइल जैसे। मेम साहेब के हाथ घूस के पइसा लेबे में का काँपल कि किशोर बाबू के मन में भयानक भूचाल उठ खड़ा भइल। ऊ डग-मगात गोड़े आ के धम से गाड़ी में बइठ गइले। ड्राइवर गाड़ी ले आ के कोठी में लगवलस त किशोर बाबू अपना से उतरियो ना सकले। ड्राइवर सहारा दे के पलंग पर लेटा गइल। बाकिर अबकी त ऊ क्लब से पी के ना आइल रहले। ड्राइवर चिन्तित हो के डाक्टर के बोलवलस। डाक्टर जाँचो कइलस बाकिर ओकरा का बुझाव। बुझाई त खाली किशोरे बाबू के नू।

रमेसवा अधे घंटा में हाजत से छूट के आ गइल। बाकिर ओकरा के किशोर बाबू आज अतना दिन बाद गौर से देखले। त का रमेसवा ……। ना, किशोर बाबू अब आउर आगे ना सोचिहें। रमेसवा किशोर बाबू लेखा नइखे। पूरा काइयाँ बिजनेस मैन निकलल बा। सेल टैक्स के लाखों रुपया पचावे वाला बिजनेस मैन। स्मगलिंग के धंधा करे वाला बिजनेस मैन, जेमें ऊ कई एक बेरा धराइयो गइल, बाकिर किशोर बाबू के प्रतिष्ठा आ पइसा का जोर पर छूट गइल। किशोर बाबू हर बेर छोड़वले त छोड़वले, बाकिर अबकी बेर काहे छोड़ावे गइले, ई किशोर बाबू के दिमाग में बइठत नइखे। इहईं त सब गड़बड़ हो गइल बा।

किशोर बाबू के आज से बाइस बरिस पहिले के जबरदस्ती भुलाइल घटना चटक के सामने आ के उजागिर हो गइल रहे।

बे माई-बाप के टूअर लइका रहले किशोर रिश्तेदारन के सहारा ले के कसहूँ बाबू। मैट्रिक पास कइले आ शार्टहैंड टाइप-राइटिंग सीख के कलक्टर राव साहेब के स्टेनो हो गइले। तब राव साहेब केतना मानत रहले उनका के। का जाने राव साहेब अब जियतो बाड़ कि ना। कहाँ कवनो खबर त नइखे। आ किशोरे बाबू कहाँ बाड़े इहे आज ले किशोर बाबू के कहाँ खबर रहल ह। बाकिर आज···· ···· ।

राव साहेब जहाँ जास किशोर बाबू के लियवले जास। ओसहीं एक बेर ऊ अपना दोस्त बर्मा साहेब के किहाँ लेके गइलो। बर्मा साहेब के बेटी के बियाह रहे। अंग्रेजी में छपल जवन नेवता राव साहेब किहाँ आइल रहे ऊ पहिले किशोरे बाबू के हाथ में पड़ल रहे। किशोर बाबू के पूरा इयाद बा। लड़िका कवनो ऊँचा डिग्रीधा डाक्टर रहे।

राव साहेब सपत्नीक सर्किट हाउस में ठहरले। किशोरो बाबू उहईं स्टाफ-रूम में ठहरल रहले। साँझ का बेरा राव साहेब के बोलाहट आइल। किशोर बाबू जब राव साहेब के सूट में पहुँचले त उहाँ बर्मा साहेब

मूड़ी झुकवले बइठल रहले। राव साहेब किशोर बाबू के लगे बोलवले, खड़ा हो के पीठपर हाथ धइले आ पुछलें—'किशोर, हम तोहार बाप हईं नू ?'

किशोर बाबू अकचकाइल बोलले रहले—'जी, रउरा माई-बाप दुनों हईं।' एह पर मिसेज राव ठठा के हँसल रहली आ बोलल रहलीं—ना, माई हम हईं।'

किशोर बाबू हतप्रभ हो गइल रहले आ का का भइल आ कइसे-कइसे भइल अब कुछओ इयाद नइखे। खाली इयाद बा कि वर के वेश में गाड़ी पर चढ़ के ऊ वर्मा साहेब के रेजिडेन्स पर गइल रहले। उहाँ बड़ी भीड़ रहे, खूब सजावट भइल रहे आ बड़ा जोर जोर से बाजा बाजत रहे। फेर ऊ माँड़ो में गइले आ वेद-मंतर का बीचे एगो लड़की से उनकर बियाह हो गइल।

बियाह के चौथा दिने जब वर्मा साहेब किहाँ के सब नेवतहर चल गइले त उहो राव साहेब के साथे लौट अइले। बाकिर अकेले। पत्नी ना अइली।

किशोर बाबू कइएक बेर ससुरार जाये के चहले बाकिर राव साहेब छुटिये ना दिहले। चिट्ठी लिखस त चिट्ठी के जवाबो ना आवे। खाली राव साहेब आ मिसेज राव के मार्फत मालूम होखे कि प्रतिभा उनकर पत्नी बीमार बाड़ी आ उनका लड़िका होखे के बा। एह से चिट्ठी नइखी लिख पावत। वर्मा साहेब के अपना कलक्टरी से फुर्सते कहाँ रहे चिट्ठी लिखे के।

एक दिन मिसेज राव कहली कि तोहरा कवनो बड़हन नोकरी के इन्तजाम हो रहल बा। ऊ होइए गइला का बाद वर्मा साहेब किहाँ तोहार गइल हो सकेला। काहे कि उनका इज्जत के सवाल बा। आखिर एक दिन पता चलल कि प्रतिभा के बेटा भइल बा आ जच्चा-बच्चा स्वस्थ बा लोग।

एक दिन राव साहेब बोलवले आ अपना साथे चले के कहले। ऊ वर्मा साहेब किहाँ जात रहले। किशोर बाबू के उछाह के मारे भुइयाँ गोड़ ना पड़त रहे। बाकिर ट्रेन में ऊ पहिलहीं अइसन राव साहेब के स्टेनो अइसन थर्डक्लास में बइठलन त उनका ई तुक ना बुझाइल कि ऊ राव साहेब के स्टेनो के हैसियत से वर्मा साहेब किहाँ जात बाड़ कि वर्मा साहेब के दामाद के हैसियत से। खैर!

राव साहेब के साथे किशोर बाबू पहिलहीं अइसन सर्किट हाउस में ठहरले। एकरो तुक उनका ना बुझाइल, बाकिर साँझीखा राव साहेब के सूट में जब किशोर बाबू के बोलाहट भइल त उनकर माथा ठनकल। वर्मा साहेब आ मिसेज वर्मा उहाँ पहिले से मौजूद रहे लोग। सँगे एगो आउर सूटधारी आदमी रहे। राव साहेब किशोर के अपना लगे बइठवले। बोलले—'किशोर तू एगो बहुत छोट क्लर्क के ग्रेड के

आदमी हउअ। तोहार माइयो-बाप नइखे। तूँ दोसरा के टुकड़ा पर पोसाइल बाड़। दोसरा ओर प्रतिभा एगो कलक्टर के बेटी बाड़ी। बड़ा लाड़-प्यार में पोसाइल बाड़ी। एह से ई संभव नइखे कि प्रतिभा के तोहरा सँगे निभाव हो सके। कलक्टरो साहेब के आपन प्रतिष्ठा ब। तोहरा अइसन दामाद के ऊ समाज के सामने नइखन राख सकत। एह से हम समझत बानी कि तूँ ई भुला जा कि तोहार प्रतिभा के साथ बियाह भइल रहे। तूँ तलाक वाला कागज पर दस्तखत बना द आ एकदमे भुला जा कि प्रतिभा के साथे तोहार बियाह भइल रहे। ओकरा बाद तूँ अपना ढंग से जीए खातिर मुक्त हो जइब। अपना ढंग से अपना समाज के अनुरूप बियाहो कर सकब आ ठीक तरह से जिन्दगी जी सकब।'

किशोर बाबू के दिमाग झनझना गइल। ऊ पहिला बेर राव साहेब के आँख से आँख मिलवले, 'त एह बियाह के नाटक के जरूरते का रहे ?'

राव साहेब बोलले, 'रहे !' आ एगो कागज बढ़ावत कहले 'एह पर इहाँ दस्तखत कर।'

किशोर बाबू बिना कागज देखले दस्तखत बना दिहले। राव साहेब बोलले, 'ठीक बा ! काल्ह सबेरे के गाड़ी से चले के तैयारी कर। तोहार प्रोमोशन आफिस सुपरिन्टेन्डेट में क देले बानी।'

किशोर बाबू पहिला बेर राव साहेब से ढिंठाई कइले, 'आ, हमरा लड़िका के का होई ?'

राव साहेब उठ के किशोर बाबू से पीठ पर हाथ धइले, ओकर चिन्ता तू मत कर। ओकरो के भुला जा। ओकरा के दाई पोस ली।'

किशोर बाबू उहाँ से उठ के स्टाफ-रूम में चल अइले। उनकर दिमाग झन झन करत रहे। आधा रात के जाने का भइल कि किशोर बाबू कमरा से निकलले आ कलक्टर साहेब के बँगला का ओर चल दिहले। बँगला के फाटक पर राइफल ले के सिपाही पहरा देत रहे। बँगला के पीछे एगो बड़ के पेड़ रहे, जेकर एगो डाली बँगला से ऊपरी मंजिल ले चल गइल रहे। किशोर बाबू बड़ोह पकड़ के बड़ पर चढ़ गइले। धीरे-धीरे सरकत-सरकत बँगला के ऊपर वाला मंजिल पर अइले आ रेलिंग ध से गते दे उतर गइले। बियाह के बेर के देखल बँगला में कवनो दिक्कत ना भइल। ऊ एगो कमरा में झँकले। नाइट बल्ब के रोशनी में लउकल, प्रतिभा पलंग पर लेटल रहली। ऊहे प्रतिभा जे आज शाम ले उनकर पत्नी रहली। नीचे चटाई बिछा के एगो औरत लेटल रहे। ओकरा बगल में छव महीना के गोल-मटोल एगो लड़िका सूतल रहे। किशोर बाबू के ई बूझे में तनिको देरी ना लागल कि दाई के गोदी में पोसात

उपेक्षित इहे उनकर लड़िका ह। किशोर बाबू बिलाई का पाँवे घर में घुसले आ दाई के पँजरा से गते दे लड़िका के उठा लिहले। प्रतिभा आ दाई खर्राटा खिचत रह गइल लोग। लड़िका सुगबुगा के किशोर बाबू के करेजा से लाग गइल। ऊ बाहर निकल के एक हाथे लड़िका के सटले आ दोसरा हाथे बड़ के डाढ़ी पर सरक गइले।

रजाई से बहरी निकलल गोड़ में ठंढा लागल आ सोचे के क्रम गड़बड़ा गइल। सिनेमा के रील लेखा तेजी से घटनाक्रम घटल रहली स। किशोर बाबू ऊ लड़िका लेले सैकड़ो कोस दूर भाग आइल रहले। आपन नया जिन्दगी पान के दूकान से शुरू क के शहर के बड़का बिजनेस मैन हो गइले। बँगला बनल आ अम्पाला गाड़ी किनाइल। किशोर बाबू चहले कि उनकर ई धन-धान्य भरल रूप वर्मा साहेब देखस, राव साहेब देखस आ प्रतिभा देखस। बाकिर ...... ना हो सकल। केहू के पता ना चल सकल।

रमेसवा हती चुकी से बढ़ के हतहक भइल। बिजनेस के सब गुर ओकरा में आइल। बाकिर काहे त ईमानदारी ना आइल। टैक्स बचवलस, स्मगलिंग कइलस, धराइल, छूटल, फेर धराइल, फेर छूटल। आ आज किशोर बाबू के अम्पाला घूस के डाली लेके एस. पी. साहेब के बंगला पर फेर गइल। नयका एस. पी. साहेब के मेम ड्राइंग रूम

में बोला लिहली। किशोर बाबू बिना उनका ओर तकले ब्रीफ केस से निकाल के नोटन के पुलिन्दा उनका ओर बढ़वले। मेम साहेब हाथो बढ़वली बाकिर काहे दू उनकर हाथ काँपे लागल। नोट के पुलिन्दा नीचे कालीन पर गिर के छितरा गइल, आ ऊ भीतर भाग गइली। किशोर बाबू चौंकचिहाइल मेम साहेब का ओर देखले। ई प्रौढ़ चेहरा के भीतर कइसन त एगो चीन्हल चीन्हल अइसन कमसिन चेहरा झाँकत रहे।

किशोर बाबू बाहर डगमगात गोड़े निकलले आ अम्पाला के सीट पर धबाक दे पसर गइले। अधे घंटा में रमेसवा छूट के चल आइल। एह बेहूदा रमेसवा के कवनो लच्छन किशोर बाबू से काहे नइखे मीलत? किशोर बाबू के रीढ़ में झिनझिनाहट बरल। आज पहिला बार किशोर बाबू के एह पर अचरज भइल कि रमेसवा के कवनो लच्छन किशोर बाबू से काहे नइखे मिलत। रमेसवा के चेहरो उनका से काहे नइखे मिलत? ………… धत्त रे की!

किशोर बाबू सरिया के हँसे के चहले। बाकिर ओठ लकवा के मरला नियर टेढ़ हो गइल आ देवाल पर टाँगल घड़ी के सूई उनका आँखिन के ढेंडर पर चढ़े लागल।

□

लेखक परिचय

जन्म--१६ मई १६०५ ई० । घर—शीतलपुर बाजार, जिला सारन । शिक्षा—काशी हिन्दू विश्वविद्यालय । बाबूजी—द्विवेदी युग के सुप्रसिद्ध साहित्यकार दामोदर सहाय सिंह 'कविकिंकर'। कृतित्व—(१) घरौंदा (हिन्दी कहानियन के संग्रह); (२) बाल विनय (सम्पादन); (३) भारत गीत (सम्पादन); (४) 'ग्राम जीवन' नावँ के हिन्दी मासिक के तीन बरिस ले सम्पादन। (५) करीब एक सौ हिन्दी कहानी विभिन्न पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित। (६) करीब पचास गो हिन्दी निबन्ध विभिन्न पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित। (७) भोजपुरी के पत्र-पत्रिकन में एक दर्जन कहानी आ लगभग एक दर्जन निबन्ध प्रकाशित । सम्मान—(१) सारन जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन के तेरहवाँ अधिवेशन के अध्यक्ष । (२) बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ओर से सम्मेलन के रजत जयन्ती का अवसर पर सम्मानित। (३) बिहार सरकार के राजभाषा विभाग से सुदीर्घ हिन्दी सेवा खातिर सम्मानित ।

पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह